Totalbhakti.com

Jh jkek;.k th dh vkjrh

आरती श्री रामायण जी की
कीरति कलित ललित सिय–पी की।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बालमीक विज्ञान विशारद।।
सुक सनकादि शेश अरु शारद।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी।।
आरती श्री रामायण जी की।।
गावत वेद पुरान अश्टदस।
छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन–धन सन्तन को सरबस।
सार अंश सम्मत सबही की।।
आरती श्री रामायण जी की।।
गावत सन्तत शम्भु भवानी।
अरु घट सम्भव मुनि विग्यानी।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी।
कागभुशुण्डि गरुड़ के ही की।।
आरती श्री रामायण जी की
कलिमल हरनि विशय रस फीकी।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव भूरी अमी की।
तात मात सबविधि तुलसी की।।
आरती श्री रामायण जी की